शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं पर गाँधी दर्शन का प्रभाव

श्रीमती रेखा डावर शोधार्थी
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

युग पुरुष महात्मा गांधी के दर्शन ने अनेक साहित्यकारों को प्राभावित किया कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि विधाओं में गांधी जी के सत्य, अहिंसा विचारों के दर्शन होते हैं। वास्तव में गांधी विचार मनुष्यता के निकट है और साहित्य में भी इसी की चर्चा की जाती है। भवानी प्रसाद मिश्र का साहित्य गांधी विचार से प्रभावित है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है

प्रस्तावना

गाँधी दर्शन को अपनी कविताओं में जिलाने वाले कवि भवानीप्रसाद मिश्र की कविताएँ, लोकोक्तियों और मुहावरों को पकड़ कर लोक-जीवन के अत्यधिक समीप है। गाँधी जी का अहिंसा भाव , मानवतावादी दर्शन और सामाजिक-समभाव भवानीप्रसाद मिश्र की रचनाओं की सृजनात्मक शक्ति है। मिश्र जी की रचनाओं में वह सब है जो उन्होंने या तो जीया है अथवा भोगा है। मिश्र जी ने स्वयं अपनी कविताओं के संबंध में स्वीकारा हैं :

"छोटी-सी जगह में रहता था , छोटी-सी नर्मदा नदी के किनारे , छोटे-से पहाड़ विन्ध्याचल के आँचल में , छोटे-छोटे साधारण लोगों के बीच। एक दम घटना-विहीन , अविचित्र मेरे जीवन की कथा है। साधारण मध्यमवर्गीय के परिवार में पैदा हुआ , साधारण पढ़ा-लिखा और काम जो किये, वे भी असाधारण से अछूते। मेरे आस-पास के तमाम लोगों की-सी सुविधाएँ-असुविधाएँ मेरी थीं। मैं नहीं जानता किसा बात को सुनाने लायक मान कर सुनाने लगूँ- खास कर जब उसे सुनाने का मतलब यह माना जायेगा कि इस सबका मेरी कविता से गहरा संबंध है।"

काव्य में गांधी दर्शन

मिश्र जी अपनी कविताओं को लेकर यह भी कहा है कि, "मैं भगवान् की बात कम करता हूँ- जब करता हूँ वह खूब साफ है; और जो साफ नहीं है, उसकी बात करने का अर्थ दूसरों के लिए एक उलझन की संभावना पैदा करने जैसा है। कदाचित् इसीलिए मैंने अपनी कविता में प्रायः वही लिखा है जो मेरी ठीक पकड़ में आ गया। दूर की कौड़ी लाने की महत्वाकांक्षा भी मैंने कभी नहीं की।"

मिश्र जी की कविताओं में मानवों के प्रति तीव्र संवेदना भाव गाँधी दर्शन के फलस्वरूप है , तो विशद महाकरूणा का विचार उन्हें बुद्ध से मिला है, कवीन्द्र रवीन्द्र में भी उन्हें प्रेरणा मिली है। सच्चाई यह है कि मिश्र जी अपनी कविताओं में दुःखियों के दुःख घटाने में सुखियों को अपना सुख लुटाने का मानवीय भाव लेकर बढ़ते हैं -

इस दुःखी संसार में जितना
बने हम सुख लुटा दें;

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बन सके तो निष्कपट मृदु ह्रास के,
दो कन जुटा दें;
दर्द की ज्वाला जगायें, नेह
भींगे गीत गायें;
चाहते हैं गीत गाते ही रहें
फिर रीत जायें।''

मिश्र जी अपनी प्रसिद्ध कविता 'असाधारण' में गाँधी दर्शन की सर्वोच्च निधि 'मानवता' के विचार को लेकर बढ़ते हैं। गाँधी ने दुःखियों के प्रति स्नेह और संवेदना के भाव को प्रकट करने का संदेश दिया है। मिश्र जी ने अपनी प्रस्तुत कविता में इसी असाधारण भाव को लिखा है-

तापित को स्निग्ध करे,
प्यासे को चैन दे,
सूखे हुए अधरों को
फिर से जो बैन दे
ऐसा सभी पानी है।''

सुख बाँटने में ही सुख की महत्ता बढ़ती है। औरों के दुःख कम करने में अपना सुख जितना बाँटोगे उतनी ही खुशी बाँटने वालों को मिलेगी। संसार में दुःख का अपार साम्राज्य हैं। घर-घर में दुःख का वास है। घर-घर के दुःख को घर-घर पहुँच कर ही मिटाया जा सकेगा। इस संदर्भ में मिश्र जी संपूर्ण मानवता को 'करूणाकर' की शपथ दिलाने का संकल्प दुहराते हैं। उसी 'करूणामूर्ति' की शपथ लेकर यदि स्नेह का भाव मन में भर कर दुखियारों के द्वार जाया जाएगा और स्नेह-भाव से उनके मध्य उपस्थित हुआ जाएगा तो इस प्रक्रिया में दुःखी वाले का अन्तस् भी खिल उठेगा। इसी संदर्भ में कवि भवानीप्रसाद मिश्र कहते हैं-

''तुम इसे उतारो स्नेह-स्नेह,
मैं तुम पर इस को मढ़ता हूँ
तुम इसे बिखेरो गेह-गेह।
हैं शपथ तुम्हें करूणाकर की
है शपथ तुम्हें उस नंगे की;
जो स्नेह भीख की माँग-माँग
मर गया कि उस भिखमंगे की!
हे, सख्त बात से नहीं
स्नेह से काम जरा ले कर देखो,
अपने अंतर का नेह
अरे, दे कर देखो।''

मिश्र जी ने अपने प्रसिद्ध गीत 'गीत-फरोश' में, 'यह गीत रेशमी है , यह खादी का ' जैसी पंक्ति लिख कर विदेशी और स्वदेशी सवेरे को उजागर लिया हैं-

जो गीत जनम का लिखूँ, मरन का लिखूँ;
जी, गीत जीत का लिखूँ, शरन का लिखूँ;
यह गीत रेशमी है, यह खादी का,

मनुष्य, मनुष्य को नकार कर चले , तो फिर मानवीय भावों का शून्य होना तो स्वाभाविक ही है। लोग हैं कि अपना आसपास भूलकर शेष संसार में आनंदपूर्वक घूमते रहते हैं।

इसी से संदर्भित मिश्र जी की यह पंक्तियाँ इस मन्तव्य की गिरह खोलती मिलती है-

''आस पास भूलता हूँ,
जग भर में झूलता हूँ।''

गाँधी जी सदैव अन्त्योदय की बात करते रहे हैं। वास्तव में अन्त्योदय की धारणा में ही सबका उदय समाहित है। स्वार्थ पूरित संसार सिंकुड़ा हुआ है, जाति-भेद से वंदित संसार कलुषित है , ऊँच-नीच की भावना में परिचालित संसार विद्वैषी है लेकिन प्यार के संसार में न कोई विषयभाव है, न कोई असहजता का भाव। सच्चा प्यार तो गिरे हुओं को उठाने में है। मिश्र जी कहते हैं-

कितने भी गहरे रहें गर्त,
हर जगह प्यार जा सकता है;

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कितना भी भ्रष्ट जमाना हो,
हर समय प्यार भा सकता है;
जो गिरे हुए को उठा सके
इस से प्यार कुछ जतन नहीं,
दे प्यार उठा पाये न जिसे
इतना गहरा कुद पतन नहीं।
देखे से प्यार भरी आँखें
दुस्साहस पीले होते हैं
हर एक धृष्टता के कपोल
आँसू से गीले होते हैं।
तो सख्त बात से नहीं
स्नेह से काम जरा ले कर देखो,
अपने अंतर का नेह
अरे,दे कर देखो।

मिश्र जी ने मरण को भी त्यौहार बनाने की बात कही है। मनुष्य यदि मनुष्यता को पूजता है , तो इस भावना में उसका भी कद ऊँचा होता है-

माथे को फूल जैसा
अपने चढ़ दें जो,
रूकती सी दुनिया कों
आगे बढ़ा दे जो
मरना वही अच्छा है।"

सचमुच मिश्रजी कविता के घर में रहते हैं मिश्रजी की कविताओं में कहीं कोई क्रत्रिमता नहीं है, अपितु मिश्रजी की कविताएँ मानवीय धरातलों का स्पर्श करती हुई, मानवीय संवेदनाओं के पक्षों को उजागर करती प्रतीत होती है। गाँधी वाद की धारणाएँ और विशेषताओं को काव्य के माध्यम से लोक में उतारने का महत्वपूर्ण कार्य मिश्र जी की कविता का निहितार्थ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 दूसरा सम्पक: सम्पादक अज्ञेय पृ. 19
2 दूसरा सम्पक: सम्पादक अज्ञेय पृ. 21
3 प्रलय (कविता) भवानी प्रसाद मिश्र। दूसरा सप्तक सम्पादक: अज्ञेय पृ. 33
4 असाधारण: भवानी प्रसाद मिश्र
5 स्नेह शपथ: भवानी प्रसाद मिश्र पृ. 36
6 गीत-फरोश भवानी प्रसाद मिश्र पृ. 37
7 वाणी की दीनता: भवानी प्रसाद मिश्र पृ. 38
8 स्नेह शपथ: भवानी प्रसाद मिश्र पृ. 35
9 असाधारण: भवानी प्रसाद मिश्र पृ. 34